Methods of Excavating Burials Mounds

Dr. Manoj Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of A.I.H. & Archaeology,
Patna University, Patna-800005

P.G. / M.A. IInd Semester,

Dept. of A.I.H. & Archaeology. Patna University

Paper- C.C.8, Concept and Technique of Archaeology, Pre and Proto History of Africa & Excavated Archaeology Sites

श्मशान/ शवाधान की खुदाई कैसे हो?–

श्मशान भूमि/ शवाधान की खुदाई बड़ी सतर्कता से करनी चाहिये। यहाँ पर हल्के औजार ही काम में लाने चाहिये। जब कि यह मालूम हो जाय कि इस स्थान पर कोई गड्ढा है, जिसमें कि शव हो सकता है, तब सबसे पहले उस स्थान को स्वच्छ करे उस शव के गड्ढें के निशान निकालकर एक किनारे से उत्खनन हल्के हाथ से प्रारम्भ करना चाहिये, धीरे–धीरे परतों को हटाना चाहिये। यह कहना बहुत कठिन है कि इसको भी दो भागों में बाँट कर हम खुदाई करें, यद्यपि शव के ऊपर के हिस्से को तो कर सकते हैं किन्तु शव के नजदीक यह करना जरा कठिन है जब तक कि शव के चारों तरफ काफी जगह न हो। इसमें जरा सा भी सन्देह नहीं है कि पूर्वोक्त विधि से खुदाई करने से समस्त परतों और उनसे उपलब्ध शव की कहानी प्रकाश में आ जाती है। ऐसी परम्परा रही है कि शव के साथ उस पुरूष की प्रिय वस्तु तथा घरेलू सामग्रियाँ उसके साथ गाड़ दी जाती रही है। शव से प्राप्त सभी वस्तुओं को यथा स्थान रखकर नक्शा तथा फोटो लेना चाहिये। कभी–कभी बर्तनों में शव को जलाकर उसकी हड्डियों को रखकर गाढ़ते थे और उसके पास उस पुरूष की प्रिय वस्तु आदि रखा करते थे। इन शव की सामग्रियों को साफ करने में आहिस्ते और बड़ी सावधानी से

काम करना चाहिये। इतना ही नहीं जहाँ तक हो सके, इन सामग्रियों को अपने स्थान से तब तक हटाना नही चाहिये जब तक कि पूरे शव को अच्छी तरह साफ करके उसका चित्र, नक्शा आदि बना न लिया जाय।

अस्थि की सफाई भी बड़ी सावधानी से करनी चाहिये। अस्थियाँ मिट्टी में नमी होने के कारण मुलायम हो जाती हैं। खोदने वाले को थोड़ी सी पुरूषों के अस्थियों का ज्ञान होना आवश्यक है। ज्यादातर शव उत्तर की ओर ही रखकर गाड़ते हैं। सबसे पहले ऊँचे होने के कारण शव का कपाल ही निकलता है। कुछ अस्थियाँ तो बड़ी कोमल होती हैं जैसे नाक की हड्डियाँ, जबड़े, गाल की हड्डियाँ आदि। किसी भी प्रकार शव की अस्थियों का हेर–फेर न होने देना चाहिये। छोटे–छोटे ब्रुशों के जरिये इन हड्डियों को साफ कर तथा कुछ रसायनों का प्रयोग कर इनके चित्र नक्शे तथा फोटो लेकर उन्हें पूरी हालत में निकालना चाहिये। जिससे फिर विशेषज्ञों द्वारा उन हड्डियों का विश्लेषण किया जाय।

वृत्तपाद या चतुष्पाद उत्खनन् :- यह वैकल्पिक विधि प्रथम विधि के इस आक्षेप का निराकरण करती है कि रिकर्ड केवल एक ही सामानान्तर अक्ष के सहारे तैयार किया जाता है। इस विधि से उत्खनन करने के लिये टीले को डोरियों के सहारे सर्वप्रथम चार भागों में बाँट दिया जाता है। आवश्यकतानुसार 50 सेमी के फासले पर खूँटियाँ गाड़ दी जाती हैं । ये खूँटियाँ प्रस्तावित स्थल से समकोण बनाती हुई गाड़ी जाती हैं जिससे कि माप लेने में आसानी हो । किनारे की खूँटियों के शिखर पर पाँच सेमी लम्बी कीलें गाड़ कर एक सुतली की डोरी बाँध दी जाती है। इन चारों प्रतिमुखी भागों (Opposite quarters) के बीच में एक मीटर चौड़ा रास्ता छोड़ दिया जाता है। प्रत्येक भाग की इस प्रकार से खुदाई की जाती है कि टीले के आर-पार दोनों दिशाओं में पूरा अनुप्रस्थ काट(Transverse section) उपलब्ध हो सके। प्रत्येक चतुर्थ भाग पर दिकुसूचक (Compass-Point) की सहायता से अंक या अक्षर लिख दिये जाते हैं अथवा कोई विशिष्ट

नाम दे दिया जाता है जैसे, अ,ब, स, द। खाके की दिक्सूचक रेखाओं में से किसी एक के पास 50 सेमी के फासले पर खूँटियों को लगाना अभीष्ट है। इन खूँटियों के सहारे प्रत्येक चौथाई भाग की अभीष्ट त्रिविमतीय माप ली जाती है। उत्खनन-कार्य की अन्तिम अवस्था के बीच के खुले हुए हिस्से अपने-आप कट जाते हैं। इस प्रकार के उत्खनन में माप लेना अपेक्षाकृत सरल एवं आसान होता है। उत्खननकर्त्ता के कार्य-क्षेत्र का स्थान अवश्य अत्यधिक संकीर्ण रहता है।

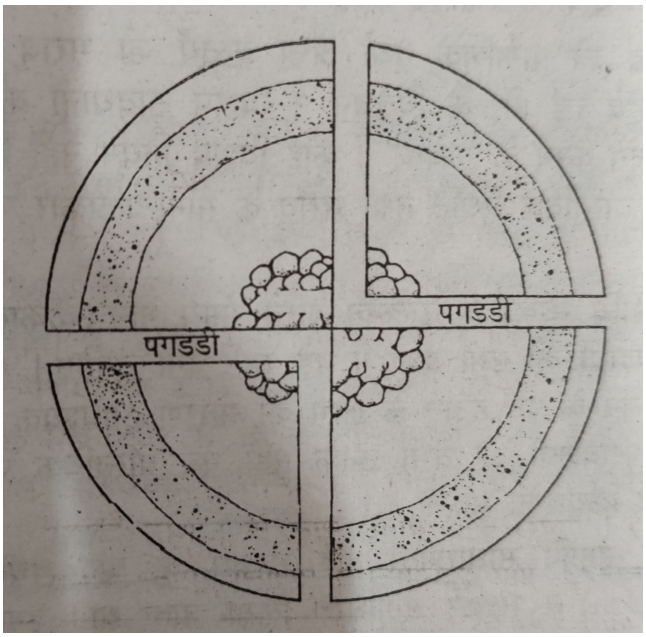

रेखाचित्र वृत्तपाद या चतुष्पाद उत्खनन्

दक्षिण भारत की महाश्म–स्मारकों या शव भाण्डो या (Megaliths) की खुदाई उपुर्यक्त ढंग से ही की जाती है। यहाँ यह कह देना अनुचित न होगा कि भारत के अलावे ये भूमध्य सागर तथा अन्ध महासागर के तटवर्ती देशों तथा इंग्लैण्ड, फ्रांस, स्पेन, जर्मनी, स्वीडन, काला सागर के पूर्वीतट, उत्तरी अफ्रीका, काकेशस, फलिस्तीन और ईरान तथा अन्य स्थानों में भी पाये जाते हैं। महाश्म स्मारक कई प्रकार के होते हैं। प्रत्येक के उत्खनन में हमें बड़ी सतर्कता रखनी पड़ती है। इनके मुख्य आकार ये हैं– (1) केर्न सर्कल, (2)

डोल्मेन या शिलान्तर्धान के आकार के कोष्ठ जिनमें घिरी हुई शिलाएँ लगी हैं, (3) डोल्मेन के आकार के कोष्ठ जिनमें अनघड़ी शिलाएँ लगी हैं, (4) 'डोल्मेन' के आकार के कोष्ठ जिनकी आवरण शिलाएँ पत्थरों के ढेर से समतल होती हैं, (5) मिट्टी के छोटे–छोटे गजपृष्ठ ढेर जो कशाश्म पत्थर की कतारों की राशि के बने होते हैं। अन्तिम आकार को छोड़कर सभी प्रकार के मेगालिथ गोल पत्थरों के ढेरों के नीचे दबे रहते हैं। ये 'डोल्मेनायड सिस्टम्' पथरीले पठार पर सामूहिक रूप से पाये जाते हैं। परन्तु केर्न सर्कल या तो पठारों की ढलवानों पर अथवा और भी नीचे कंकरीली समतल भूमि पर बने होते हैं। साधारण केर्न सर्कल के नीचे शव भाण्ड अकेले अथवा सामूहिक रूप से डूबे होते हैं, परन्तु 'डोल्मेन' के आकार के कोष्ठ के अन्दर पकी मिट्टी की टांगों वाली शव मंजूषाएँ अकेली अथवा सामूहिक रूप में पार्य जाती हैं। पत्थरों के गजपृष्ठ ढेरों के नीचे केवल शवभाण्ड होते हैं, जो बड़े आकार के तथा नाशपातीनुमा होते हैं।